भगवान परशुराम चालीसा

श्री क्षेत्र परशुराम चिपळूण

भगवान परशुराम चालीसा

गुरुजन चरण पखार कर चरणामृत करूं पान |
महिमा परशुधारी की मन से करूं बखान ।

यति जयति जै परशुधारी, पूरण परमपुरुष अवतारी ।
ऋषि जमदग्नि के तुम प्यारे, रेणुका के आंख के तारे ।

शिवशंकर से विद्या लीन्ही, दत्तात्रेय ने शक्ति दीन्ही ।
विद्युदभी है परशु तुम्हारा, सारंग चाप लोक में न्यारा ।

शास्त्र शस्त्र ज्ञान के दाता, भीष्म द्रौण के भाग्यविधाता
कार्तवीर्य संग करी लड़ाई, नृपाधम को मुक्ति दिलाई।

इक्कीस बार दुष्टों को मारा, पृथ्वी का सब भार उतारा
जो राजन भुवि धर्माचारी, तिनकी नहीं हानि बिचारी।

जो निरंकुश भुवि भूपाला, उनको काल गाल में घाला ।
भूमंडल सब जीत लिया, फिर कश्यप को दान किया।

कुरुक्षेत्र पंचतीर्थ बनाया, पितरों का पिंडदान कराया।
रामह्रद में तर्पण किन्हा, पितरों को श्रद्धांजलि दीन्हा ।

पंचभ्रात में लघुतम भ्राता, जिनसे तृप्त पिता व माता ।
शिव दर्शन को गये कैलाशा, गुरुदर्शन की लेकर आशा

गणपति ने मार्ग नहीं दीन्हा, दंत तोड़ एकदंत किन्हा।
राम ने भंग किया जब चापा, सब नृप भए मन संतापा ।

राम से मिलकर युद्ध की ठानी, सब भूपति भए अभिमानी।
मंगल मांही अमंगल भांपा, जनकराज का ह्रदय कांपा ।

शंभूचाप का बहाना बनाए, परशुधारी स्वयंवर आए।
कहां क्रोधी क्षत्रगण भारी, कहां रघुपति बाल विचारी ।

क्षत्री सो राम लखन भिड़ जाई, शगुन रंग में भंग पड़ जाई ।
राम को राम परस्पर लखते, खुद की लीला खुद ही तकते ।

प्रभु देख हुए नयन तर्पित, निजकला राम को किन्ही अर्पित ।
गिरि महेंद्र पर किया प्रस्थाना, जप तप व्रत हेतू मन माना ।

सागर से तप भूमि मांगी, सागर के उर अहं सी जागी ।
देखि क्रोध में फरसा घुमाया, सागर को पीछे खिसकाया ।

केरल का निर्माण किया, शठ जलधि को दंड दिया।
रावण को भी दिशा दिखाई, विप्र वध पर डांट लगाई।

श्रीविद्या के परम उपासक, विप्रकुलवंद्य चराचर शासक।
कल्पसूत्र का किया निर्माणा, श्रीविद्या का रहस्य बखाना।

त्रिपुरसुंदरी की सेवा किन्हीं ब्रह्मतेज की विद्या लीन्ही ।
नित भूमंडल परिक्रमा करते, भक्त जनों के संकट हरते ।

कुरुक्षेत्र एक तीर्थ निराला, रामह्रद जगे तप की ज्वाला ।
पूर्णिमा मेला भारी, सब भक्तों पर दया तुम्हारी ।

रामहद में स्नान जो करते, संकट को रेणूकासुत हरते ।
स्नान ध्यान परिक्रमा लगावे, अनन्तकोटि यज्ञ फल पावै ।

तीर्थ बसे जो एक संवत्सर, बाबा कृपा करें ता ऊपर।

हर पूर्णिमा बाबा आते, सच्चे भक्तजन दर्शन पाते।

चिरंजीवी है नाम तिहारा, निज भक्तन का सदा रखवारा।

पुत्र पौत्र धन धान्य विशाला, तुम्हरे भक्त रहे खुशहाला ।

रोग दोष को दूर भगावे, सदा बाबा में ध्यान लगावे ।

जोति यह चालीसा गावे, कृष्ण कहें सदा सुख पावे ।

आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा छिहत्तर दो हजार ।

बैठा तेरे चरणों में कर दो बेड़ा पार ।।

* इति शम् *